एक ट्वीट ने दिया ऐवरेज स्टूडेंट्स के पैरंट्स को सोचने का नया नजरिया

हर बच्चा अपने आपमें खास होता है। ऐसे तमाम उदाहरण हैं जब बच्चा पढ़ाई में अव्वल ना था लेकिन अपने दम पर उसने मुकाम हासिल किया। ऐक्सपर्ट्स का कहना है कि इसलिए औसत बच्चे की खूबियों को कम करके ना आंकें:

'मेरा बच्चा डॉक्टर-वैज्ञानिक ना सही, अच्छा इंसान जरूर बनेगा'

Shubham.Tripathi@timesgroup.com

बच्चा अगर पढ़ाई में तेज है तो माना जाता है कि वह बुद्धिमान है और करियर व सफलता के पैमाने पर उसका भविष्य भी अच्छा होगा। अगर बच्चा खेल या किसी एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटी में अव्वल है तो भी पैरंट्स खुश होते हैं कि बच्चा आगे चलकर कुछ ना कुछ अच्छा करेगा। लेकिन ऐवरेज स्टूडेंट्स, जो ना तो पढ़ाई में अव्वल हैं और ना खेल या एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटी में आगे हैं, उनके पैरंट्स को अक्सर समझ नहीं आता कि उनका बच्चा बड़ा होकर क्या बनेगा? किस क्षेत्र में उसे आगे बढ़ाया जाए या उनकी कौन सी खूबी को अपने फ्रेंड्स-रिश्तेदारों के बीच बताया जाए। कई बार तो इस वजह से उन्हें शर्मिंदगी भी महसूस होती है और फिर उम्मीदों का बोझ बढ़ता है बच्चों को कंधों पर। मगर पिछले दिनों एक ऐसा ट्वीट सामने आया जिसने औसत छात्रों के पैरंट्स को सोचने का एक नया नजरिया दिया। इस ट्वीट में बताया गया कि औसत बच्चे की किन खूबियों पर पैरंट्स शाबाशी दे सकते हैं और किन खूबियों पर उन्हें गर्व करने की जरूरत है।

प्रोफेसर सुमति (@ProfSumathi) ने अपने ट्विटर पर लिखा, 'मैं एक ऐवरेज बच्चे की मां हूं। ऐवरेज का मतलब है कि मेरा बच्चा सीखने में औसत है, मार्क्स में भी औसत है और स्पोर्ट्स व एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज में भी सामान्य है। स्कूल और समाज के लिहाज से वह बिल्कुल खास नहीं है। मेरा बच्चा इतना औसत है कि लोग उसकी प्यारी मुस्कान, उसकी मजेदार बातों, उसकी दोस्ताना शख्सियत, अच्छे व्यवहार, मदद करने की आदत को भी नोटिस नहीं करते। जिस उम्र में बच्चे आईआईटी, एमबीबीएस की तैयारी करते हैं, मेरा बच्चा दुनिया घूमने, नए लोगों से मिलने और नए-नए पकवान खाने के बारे में बात करता है। मेरा औसत बच्चा भले ही डॉक्टर, वैज्ञानिक या एस्ट्रोनॉट ना बने लेकिन वह अच्छा इंसान जरूर बनेगा जो खुशियां फैलाएगा। हर बच्चा अलग है, इसलिए हर बच्चे की पैरेंटिंग का स्टाइल भी अलग होना चाहिए।' सोशल मीडिया पर इस ट्वीट को तमाम लोग सराह रहे हैं, तो वहीं कई पैरंट्स अपने औसत बच्चे की खूबियां भी गिना रहे हैं।

हर बच्चे में है कुछ खासियत

औसत बच्चों के अभिभावकों की सबसे बड़ी टेंशन यही होती है कि हमारा बच्चा भविष्य में पिछड़ जाएगा और सफलता हासिल नहीं कर पाएगा। पैरेंटिंग एक्सपर्ट गीतांजलि शर्मा कहती हैं कि सबसे पहले पैरंट्स को इस सोच में बदलाव लाना होगा। उन्हें समझना होगा कि हर बच्चा शाहरुख खान, विराट कोहली या सचिन तेंदुलकर नहीं है। हर बच्चे के पास कुछ ना कुछ खासियत होती है और आपके बच्चे के पास जितनी खासियत है, उसे उतनी ही समझनी होगी। बच्चे की पॉजिटिव चीजों को पहचानें, उन्हें मजबूत करें और उसके साथ ही आगे बढ़ें। दूसरों को देखेंगे तो हमेशा कोई ना कोई आगे दिखेगा।' मनस्थली की फाउंडर और सीनियर सायकायट्रिस्ट डॉ. ज्योति कपूर कहती हैं, 'पहले तो यह सोच बदलनी चाहिए कि ऐवरेज स्टूडेंट्स का फ्यूचर अच्छा नहीं होता। कई लोग अच्छा बिजनेस चला रहे हैं लेकिन वह उतने पढ़े-लिखे नहीं है। कई लोगों का करियर अच्छा है लेकिन उन्हें संतुष्टि नहीं है। कई लोग अपने अच्छे करियर को भी सफलता नहीं मानते हैं। तो यह सोच पर निर्भर करता है। आज का दौर बहुत अच्छा है क्योंकि कई ऐसे कोर्सेज मौजूद हैं जिनमें ऐवरेज बच्चा अच्छा परफॉर्म कर सकता है। मगर पैरंट्स को लगता है कि जिस चीज से उन्हें खुशी मिल रही है, उससे बच्चे को भी खुशी मिलेगी। ये सच नहीं है। इसलिए हमारी आम धारणा है कि हम बच्चे की स्ट्रेंथ पर काम नहीं करते हैं। जबकि हमें उस पर फोकस करना चाहिए।'

Indiapicture

बच्चे और शिक्षकों से जानें स्ट्रेंथ

अगर पैरंट्स अपने 10वीं और 12वीं क्लास में पढ़ने वाले औसत बच्चे की खूबियां और दिलचस्पी वाला क्षेत्र नहीं पहचान पा रहे हैं तो उन्हें क्या करना चाहिए? साइकॉलजिस्ट और पर्सनैलिटी डिवेलपमेंट एक्सपर्ट डॉ. इशिता मुखर्जी कहती हैं कि पैरंट्स को बच्चे की क्रिएटिविटी और स्ट्रेंथ को नोटिस करना चाहिए। बच्चे से बात करें कि वह किस क्षेत्र में करियर बनाना चाहता है। करियर काउंसलर अशोक बंसल कहते हैं कि स्कूल के टीचर से बात करके भी पैरंट्स समझ सकते हैं कि बच्चे की दिलचस्पी किस चीज में है। गीतांजलि शर्मा कहती हैं कि अगर पैरंट्स बच्चों का इंट्रेस्ट नहीं पहचान पा रहे हैं तो उसे तमाम वर्कशॉप और ऐक्टिविटीज में डालें और तब मॉनिटर करके पता किया जा सकता है।

जब कोई रास्ता ना नजर आए?

लगभग सभी एक्सपर्ट्स का कहना है कि जब किसी भी तरह से बच्चे की दिलचस्पी और करियर के बारे में पता ना लग सके तो एप्टिट्यूड टेस्ट के जरिए पता लगाया जा सकता है। अशोक बंसल कहते हैं कि बाजार में एक साइकोमैट्रिक टेस्ट आता है जो 500 रुपये जैसे सस्ते दाम पर भी उपलब्ध है। इसके जरिए बच्चे के एप्टिट्यूड का पता लगाया जा सकता है। इससे तीन बातें पता लगती हैं कि बच्चे की दिलचस्पी किस क्षेत्र में है, उसकी योग्यता किस क्षेत्र में है और उसकी पर्सनैलिटी किस क्षेत्र में फिट होगी। इस टेस्ट के बाद पैरंट्स और बच्चे दोनों समझ पाएंगे कि उसे किस क्षेत्र में आगे बढ़ना है। सन्नर इंटरनैशनल हॉस्पिटल्स के सायकायट्रिस्ट डॉक्टर राहुल राय कक्कड़ कहते हैं, 'अगर बच्चे में लॉस ऑफ इंट्रेस्ट दिख रहा है जैसे कि वह पहले डांस करता था लेकिन अब नहीं करता या चिड़चिड़ा हो रहा है तो समझ जाएं कि कुछ समस्या है। तो उसे किसी मनोरोगी को दिखाएं। इसके अलावा बच्चों का इंट्रेस्ट समझने के जजमेंट क्राइटेरिया होते हैं। तो जरूरी है कि किसी प्रफेशनल से जज करवाएं। कई बार बच्चे की खराब परफॉर्मेंस के पीछे कोई दूसरी समस्या होती हैं जिन्हें पैरंट्स समझ नहीं पाते। मान लीजिए कि अगर किसी में आईक्यू लेवल ठीक है लेकिन एंग्जायटी डिसॉर्डर है, तो वह उस वजह से परफॉर्म नहीं कर पा रहा है। एक्सपर्ट उसे पकड़कर उसका इलाज कर सकेगा।'

Indiapicture